Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

Original Article

गुरु नानक देव जी के काव्य में धार्मिक और सामाजिक चेतना

डॉ. नवनीत कौर
सहायक प्रोफेसर हिंदी, संत मोहन सिंह खालसा लबाना गर्ल्स कॉलेज, बराड़ा,अंबाला ।
Email: navi.kaur45@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171125
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 11(A)
Pp. 139-141
November. 2025
Submitted: 18 Oct. 2025
Revised: 28 Oct. 2025
Accepted: 11 Nov. 2025
Published: 30 Nov. 2025

सारांश

श्री गुरु नानक देव जी सिख धर्म के पहले गुरु तथा सस्थापक हैं। उनके विचार व सिद्धांत आज भी सिख धर्म के मूल आधार हैं। गुरु नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि और विश्वबन्धु इत्यादि सभी गुण समेटे हुए थे ।गुरु जी के विचार आज भी न्यायपूर्ण तथा करुणामय जीवन जीने के लिए प्रेरित समाज को प्रेरणा देते हैं। उन्होंने अपने काव्य के द्वारा मानवता की एकता ,अखंडता और प्रेम का उपदेश दिया है।

मुख्य शब्द *: अकाल पुरख, प्रवर्तक ,विश्वबन्धु, दार्शनिक, उदासियाँ, रहिरास, बारामासा, आत्मज, संप्रदाय, सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वदेशिक, जुगादि इत्यादि ।*

प्रस्तावना

सिख संप्रदाय के प्रवर्तक श्री गुरु नानक देव जी का जन्म सन 1526 में अविभाजित पंजाब के जिला लाहौर में बसे तलवंडी गांव में हुआ। इनके पिता मेहता कालू राम तथा माता तृप्ता देवी था। गुरु नानक देव का विवाह गुरदासपुर निवासी मूलचंद खत्री की बेटी सुलखनी से हुआ था। उनके दो बेटे थे श्री चंद व लखमीचंद । बचपन से ही प्रभु भक्ति में मगन रहने वाले गुरु नानक देव जी को उनके पिताजी ने सांसारिक कामों में लगाने का प्रयत्न किया। लेकिन कामकाज से ज्यादा मन प्रभु भक्ति में लीन रहता है। नानक देव जी, बाबा नानक और नानकशाह नामों से सम्बोधित करते हैं। नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, कवि और विश्वबन्धु इत्यादि सभी गुण समेटे हुए थे। नाम भक्ति का प्रचार प्रसार करने के लिए इन्होंने अनेक उदासियाँ की । पहली उदासी (1500-1506) , दूसरी उदासी (1506-1513) , तीसरी उदासी (1514-1518) और चौथी उदासी (1519-1521) समय अवधि में की थी। संपूर्ण भारत में पड़ोसी देशों के साथ-साथ अनेक मुस्लिम एवं एशियाई देशों की भी यात्रा की तथा ईश्वर प्रेम व भक्ति का संदेश दिया। इन्होंने सामाजिक सुधारक के रूप में अनेक कार्य किए। धार्मिक आडंबर, सामाजिक कुरीतियों, हीनताओं , बाह्याडंबरों ,जाति-पाति का विरोध,अवतारवाद का खंडन इत्यादि अनेक प्रवृतियाँ इन के काव्य में समाहित है। डॉ. नित्यानंद शर्मा गुरु नानक देव के विषय में लिखते हैं ,"गुरु नानक एक भक्त उपदेशक के रूप में सामने आए। उन्होंने खंडन मंडन की प्रवृत्ति का पूर्ण परित्याग किया। वह सर्वोत्तम स्वरूप परमात्मा के ओंकार रूप के ध्यान को महत्व देने लगे। भक्ति योग के लिए नाम जप को महत्ता मिली।"[i] इन्होने अनेक काव्य रचनाएँ लिखी है 'जपजी साहिब ' ,बारामासा ', आसा दी वार ' इत्यादि। डॉ. शर्मा अपनी पुस्तक में सिख मत में नाम स्मरण की पद्धति पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि -

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. नवनीत कौर, सहायक प्रोफेसर हिंदी, संत मोहन सिंह खालसा लबाना गर्ल्स कॉलेज, बराड़ा,अंबाला ।

How to cite this article:
कौर, . नवनीत . (2025). गुरु नानक देव जी के काव्य में धार्मिक और सामाजिक चेतना. Journal of Research and Development, 17(11(A)), 139–141. https://doi.org/10.5281/zenodo.17892924

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17892924
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

"रहिरास में 'रहि' का अर्थ है 'एकांत' तथा 'रास' का अर्थ है 'रमण' . मन को अहंकार से दूर रखकर गुरु की महत्ता हरि के समान जानकर तथा उसकी सेवा करके निरंतर राम नाम जपना चाहिए।[ii] गुरु नानक देव ने मनुष्य के चरित्र पर बल दिया है। उनके अनुसार व्यक्ति चरित्र से धनी होना चाहिए , ईश्वर के नाम में रमन करते हुए जीवन व्यतीत करना ही चारित्रिक शुद्धता है। माया के मोह में फंसा व्यक्ति ईश्वर की प्राप्ति नही कर सकता। "नानक पंथ में गुरुओं ने संसार में रहते हुए मुक्ति का उपाय खोज निकाला था। अतः अपने व्यक्तिगत जीवन का आदर्श रखते हुए उन्होंने व्यक्ति और समाज के चरित्र बल के निर्माण का प्रयत्न किया।"[iii]

गुरु नानक देव ने संन्यास का बहिष्कार किया है।गृहस्थ को श्रेष्ठ मानते हुए उन्होंने स्वयं भी गृहस्थ जीवन व्यतीत किया तथा साथ ही साथ प्रभु भक्ति करते हुये समाज को भी गृहस्थ जीवन जीने का सन्देश दिया।" समाज में संन्यास के लिए कोई स्थान नहीं है, इसलिए नानक ने अपने आत्मज किंतु सन्यासी पुत्र श्रीचंद को एकांत सेवी और उदासी होने के कारण गद्दी नहीं दी। गुरु नानक देव स्वयं गृहस्थ थे और उनके पश्चात् जो नौ गुरु हुए हैं उनमें गुरु हरकृष्ण को छोड़कर, जिनकी मृत्यु बाल्यावस्था में हो गई थी, सभी गृहस्थ हुए . यदि नानक अपनी गद्दी श्रीचंद को देते तो वह गुरु नानक के पंथ को साधु संप्रदाय में परिवर्तित कर देते।"[iv]गुरु नानक देव ने निर्गुण ईश्वर की भक्ति का प्रचार -प्रसार किया है। उनके अनुसार ईश्वर कण कण में निवास करते है। मनुष्य को प्रभु की प्राप्ति अपने मन के भीतर ही हो सकती है यदि वह सच्चे मन से नाम समरण करे। निर्गुण ईश्वर का स्वरूप न तो केवल दार्शनिक सिद्धान्त है, न ही केवल काव्यात्मक रूप है, वह एक अनुभव है—एक ऐसी अवस्था जहाँ "मैं" और "तु" का भेद समाप्त हो जाता है, और केवल शुद्ध, अनन्त चेतना ही शेष रहती है। निर्गुण ईश्वर वह परम-सत्ता है, जिसका कोई रूप-रंग, गुण-धर्म या सीमा नहीं। "उसकी मूर्ति (अकाल) काल (मृत्यु) रहित है, नाश नहीं होती तथा उसकी मूर्ति समय के अधीन नहीं है। जिस कारण वह बाल्य, किशोर तथा फिर वृद्धावस्था प्राप्त नहीं करता, वह सदैव एक समान रहता है।"[v]

एक समय गुरु नानक देव जी की सिद्धो के साथ गोष्ठी हुई थी ,जिसमें प्रश्न उत्तर का लंबा सिलसिला चला था। सिद्धो ने गुरु जी के सामने प्रश्नावली रखी, जिनका एक-एक कर गुरु जी ने उत्तर दिया। इन प्रश्नों में ईश्वर क्या है ? कैसे प्राप्त किया जा सकता है? यह संसार किसके अनुसार चलता है ? इस संसार को बनाने/ चलने वाला कौन है? इत्यादि अनेक प्रश्न पूछे गए जिनका उत्तर गुरु जी ने बहुत ही सहनशीलता और उदाहरण सहित दिया ।"हे सिद्धो ,हुक्म से ही उत्तम व नीच होता है। हुकुम से ही लिखे हुए दुख और सुख प्राप्त किए जाते हैं।"[vi] लेकिन ऐसे ईश्वर की प्राप्ति सहज नही हो सकती। भक्ति मार्ग और नाम जप कर ही हम निर्गुण ईश्वर की प्राप्ति कर सकते है। भक्ति के मार्ग को कठिन बताया गया है। इस मार्ग पर चलने का तरीका बताने तथा ईश्वर की प्राप्ति में केवल गुरु ही सहायता कर सकता है । गुरु का महत्व बताते हुए गुरु नानक देव कहते है कि "सतगुरु ने मेरे बुद्धि रूप नेत्रों में ज्ञान का रूप काजल डाल दिया है जिससे मेरे अज्ञान अंधेरे का नाश हो गया है। प्रभु की कृपा से संतों का मिलाप हुआ है जिससे मेरे हृदय में ज्ञान का प्रकाश हुआ है। "[vii] सिख पंथ में ईश्वर को 'अकाल पुरख' के नाम से सम्बोधित किया गया है। जो सार्वभौमिक है (जो संपूर्ण जगत या सभी पर लागू हो) सार्वकालिक है (जो सभी समय में हो, जिसकी उत्पत्ति और अंत न हो), सार्वदेशिक है (जो सभी देशों या स्थानों से संबंधित हो) जो भूतकाल ,वर्तमान काल , भविष्य काल में भी सत्य है. गुरु नानक देव अपनी रचना 'जपजी साहिब' में लिखते हैं -

'आदि सचु जुगादि सचु
है भी सचु नानक होसी भी सचु'

"वह आदि (जगत की उत्पति से पहले)उत्पत्ति से पहले भी सत्य था। जुगादि (युगों के आरंभ में) भी सत्य था,है भी (अब वर्तमान समय में भी सत्य है) होसी (आगे आने वाले भविष्य में भी) जब सृष्टि नाश हो जायगी,भी सत्य होगा।"[viii] गुरु नानक देव ने इकेश्वरवादी विचारधारा का उपदेश दिया . वे जहां निर्गुण ईश्वर के उपासक थे, वही सर्वधर्म समर्थक भी थे।"नानक देव भी कबीर की भांति बहुश्रुत एवं निजी अनुभव युक्त बात करते थे। वह निराकारवादी थे। इसलिए अन्य संतों की भांति, अवतारवाद, मूर्ति पूजा एवं अन्य सामाजिक रूढ़ियों अंधविश्वासों का खंडन किया। उन्होंने हिंदू मुसलमान एकता के लिए ब्रह्म (पुरुष)की प्राप्ति के लिए सीधे व सरल उपदेश दिए। उनके पदों में भक्ति, सरलता, दीनता और आत्म समर्पण के भाव मुख्य है। गुरु नानक ने अन्य निर्गुण संतों की तरह नारी की निंदा ,नहीं की उसकी प्रशंसा ही की है। उन्होंने मुसलमान द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का विरोध किया।"[ix]

गुरु नानक देव जी की यात्राएँ (उदासियाँ) वास्तव में अद्वितीय थीं और उन्होंने विश्व में शांति, प्रेम और समानता के संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी यात्राएँ हज़ारों मील तक फैली हुई थीं और उन्होंने विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और समुदायों के लोगों से मुलाकात की। इन यात्राओं के दौरान, गुरु नानक देव जी ने लोगों को एकता, प्रेम और सेवा का संदेश दिया। उन्होंने लोगों को अपने धर्म

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-11(A)| November- 2025

के अनुसार जीने की शिक्षा दी और उन्हें समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानताओं के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया। गुरु नानक देव जी की यात्राओं का प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। उन्होंने विश्व में एकता और प्रेम का संदेश फैलाया और लोगों को अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित किया। उनकी शिक्षाएँ आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं और उन्हें एक बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

संदर्भ

1. शर्मा ,डॉ नित्यानंद ,हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप, नई दिल्ली, आशा प्रकाशन ग्राहक विद्या संस्करण 1991, पृष्ठ-
2. शर्मा ,डॉ नित्यानंद ,हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप, वही , पृष्ठ -105
3. शर्मा ,डॉ नित्यानंद ,हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप, वही , पृष्ठ -103
4. शर्मा ,डॉ नित्यानंद ,हिंदी काव्य में भक्ति का स्वरूप, वही , पृष्ठ -103
5. सिंह, सोढ़ी तेजा, जीवन सिंह, (टीकाकार), कथा सागर, अमृतसर, तृत्य संस्करण, 2008, पृष्ठ -21
6. सिंह, सोढ़ी तेजा, जीवन सिंह, (टीकाकार), कथा सागर, वही , पृष्ठ -45
7. सिंह, सोढ़ी तेजा, जीवन सिंह, (टीकाकार), कथा सागर, वही , पृष्ठ -01
8. सिंह, सोढ़ी तेजा, जीवन सिंह, (टीकाकार), कथा सागर, वही, पृष्ठ -30
9. सिंह ,डॉ. बहादुर, हिंदी साहित्य का इतिहास , माधव प्रकाशन, यमुनानगर, 2002, पृष्ठ -119